Metres in the Rāmacaritamānasa
रामचरितमानस में छन्द

August 14, 2011
श्रावणी पूर्णिमा, विक्रम संवत् २०६८

Nityānanda Miśra
नित्यानन्द मिश्र

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

I. Introduction
क. प्रस्तावना

This bilingual article in English and Hindi enlists all the Saṃskṛta and Prākṛta metres used in the the Rāmacaritamānasa of Gosvāmī Tulasīdāsa. Many printed versions of the epic are in existence today, and I have considered the critical edition of the Rāmacaritamānasa edited by my Guru, Jagadguru Rambhadracharya, and published by Tulsi Peeth, Chitakuta, Uttar Pradesh as the authentic edition.[1]

आंग्लभाषा और हिन्दी में लिखित यह द्विभाषीय लेख गोस्वामी तुलसीदास विरचित रामचरितमानस में प्रयुक्त सभी संस्कृत और प्राकृत के छंदों को सूचित करता है। अद्यतन ग्रन्थ के बहुत से मुद्रित संस्करण प्रचलित हैं, परन्तु मैंने अपने गुरुदेव जगद्गुरु रामभद्राचार्य द्वारा सम्पादित और तुलसी पीठ, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश द्वारा मुद्रित रामचरितमानस की प्रामाणिक प्रति को मान्य माना है।

The Rāmacaritamānasa consists of 10,902 verses composed in as many as 18 Saṃskṛta and Prākṛta metres, which will be described sequentially. The knowledge of the metres is essential for the perfect recitation or musical rendition of the epic – the nuances of the instants and the caesura helps one read or sing the epic keeping a harmonious synchronization with the mtetre being recited or sung. Erring on a single instant or caesura results in breakdown of the rhythm, this happens even with seasoned singers of the epic. An example is the recitation of the following line (Rāmacaritamānasa 1.96.9).

जो फल चहिय सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहि लागई।

while rendering the line in the album Shiv Vivah in his divine voice,[2] Pandit Channulal Mishra misses the rhythm by one instant the first time, rendering चहिय in four instants instead of three. The veteran of Ramacaritamanasa singing he is, he realizes it immediately and renders the line again, this time flawlessly.

---

[1] Rambhadracharya, Svami, ed (March 30, 2006) (in Hindi). *Śrīrāmacaritamānasa - Original Text (Tulasīpīṭha edition)* (4th ed.). Chitrakuta, India: Jagadguru Rambhadracharya Handicapped University.
[2] Mishra, Pandit Channulal (Singer). (2009). *Shiv Vivah*. [CD]. New Delhi, India: Devi Foundation. Track 3 of 5. Event occurs at 00:18:55.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

रामचरितमानस में १०,९०२ पद हैं, जोकि यहाँ वर्णित १८ संस्कृत और प्राकृत छंदों में रचित हैं। छंदों का ज्ञान त्रुटिरहित पाठ और गान के लिए अनिवार्य है – मात्राओं और यतियों का सूक्ष्म ज्ञान ग्रन्थ के पाठ और गान में सहायक है। एक भी मात्रा या यति में गड़बड़ी होने से लय टूट जाते है, और यह मानस के वरिष्ठ गायकों के साथ भी होता है। उदाहरणार्थ इस पंक्ति का गायन लीजिए (रामचरितमानस १.९६.९):

जो फल चहिय सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहि लागई।

शिवविवाह एल्बम में अपने गान्धर्व स्वर में इस पंक्ति को प्रथम बार गाते हुए पण्डित छन्नूलाल मिश्र की लय एक मात्रा से टूटती है, वे *चहिय* पद को तीन मात्राओं के बजाय चार मात्राओं में गाते हैं। रामचरितमानस के मंजे हुए गायक होने के कारण वे इस त्रुटि को तुरंत जान लेते हैं और इस पंक्ति को पुनः गाते हैं, इस बार पूर्णतः निर्विकृत।

II. A short note on Saṃskṛta and Prākṛta Prosody
ख. संस्कृत और प्राकृत छन्दःशास्त्र का संक्षिप्त परिचय

The Rāmacaritamānasa is composed in both Avadhi (Prākṛta) and Saṃskṛta. Metres in Prākṛta and Saṃskṛta are of two kinds, Vārṇika and Mātrika. The unit for both is a Varṇa or syllable, which is a sound with a single vowel. Specifically, Varṇa can mean –

- A single vowel without any consonant (e.g. अ, इ, उ, ए)
- One or more consonants followed by a terminal vowel (e.g. क, क्य, स्त्य, स्त्र्य)

Vārṇika metres are governed by rules which stipulate the number of syllables, the sequence of short and long syllables, and by implication, the number of instants. Whereas the Mātrika metres are governed by rules which stipulate the number of instants only. A short syllable has one instant while a long syllable has two instants.

रामचरितमानस अवधी (प्राकृत) और संस्कृत दोनों में रचित है। प्राकृत और संस्कृत में छन्द दो प्रकार के होते हैं – वार्णिक और मात्रिक। दोनों की इकाई है वर्ण, जो कि केवल एक स्वर सहित उच्चारित ध्वनि है। वर्ण से यहाँ अर्थ है –

- एक अकेला व्यञ्जन रहित स्वर (अ, इ, उ, ए इत्यादि)
- एक या एक से अधिक व्यञ्जन के बाद एक अन्त्य स्वर (क, क्य, स्त्य, स्त्र्य इत्यादि)

वार्णिक छन्द में वर्णों की सङ्ख्या, लघु-गुरु क्रम और तदनुसार मात्राओं की संख्या का नियम होता है। जबकि मात्रिक छन्द में केवल मात्राओं की संख्या का नियम होता है। लघु वर्ण की एक मात्रा होती है और गुरु वर्ण की दो।

There are some rules to distinguish a short syllable from a long syllable in prosody –

- अ इ उ ऋ लृ – these short vowels, alone or after one or more consonants, are counted as one instant. E.g. अ, इ, उ, ऋ, लृ, क, हि, गु, तृ, क्लृ, etc.
- आ ई ऊ ए ऐ ओ औ – these long vowels, alone or after one or more consonants, are counted as two instants. E.g. आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, हा, जी, मू, ते, को, गौ, etc.

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

- If the terminal vowel of the syllable is followed by the Anusvāra or the Visarga, the syllable is counted as two instants. E.g. सः, गाः, यं, श्रीं, इत्यादि।
- The short syllable before a conjunct consonant (two or more consonants without any intermediate vowel like क्य, ज्ञ, क्ष or त्र्ल्य), is counted as a long syllable. Exceptions to this rule are conjuncts प्र, ह्र, ब्र and क्र. In Prākṛta, this rule is applicable only if the preceding vowel and the conjunct are part of the same word. For example in मायामनुष्यं, the नु is counted as a long syllable (Saṃskṛta), but in जब ते राम ब्याहि घर आए, the म in राम is counted as a short syllable (different word in Prākṛta).
- A short syllable at the end of a foot (sixth part, quarter of half) of a verse may be considered as a long syllable, if required to complete the metre.
- In Prākṛta, the ए and the ओ have two versions – a short one and a long one. They are not indicated by any special marks in published versions of the epic, nor are there any rules to distinguish the same. The fine distinction can be made by practicing singing of the epic. For example in सभय हृदय बिनवति जेहि तेहि, the जे in जेहि is a short syllable, but the ते in तेहि is a long syllable.

छन्दःशास्त्र में लघु-गुरु निर्धारण के लिए कुछ नियम हैं -

- अ इ उ ऋ लृ - ये ह्रस्व स्वर अकेले हों या एक अथवा एकाधिक व्यञ्जन के बाद, इनकी एक मात्रा होती है (लघु)। यथा अ, इ, उ, ऋ, लृ, क, हि, गु, तृ, क्लृ इत्यादि।
- आ ई ऊ ए ऐ ओ औ - ये दीर्घ स्वर अकेले हों या एक अथवा एकाधिक व्यञ्जन के बाद, इनकी दो मात्राएँ होती हैं (गुरु)। यथा आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, हा, जी, मू, ते, को, गौ इत्यादि।
- वर्ण के अन्त्य स्वर के बाद अनुस्वार और विसर्ग में होने पर दो मात्राएँ होती हैं (गुरु)। यथा सः, गाः, यं, श्रीं, इत्यादि।
- संयुक्ताक्षर (दो या अधिक व्यञ्जन जिनके बीच कोई स्वर न हो यथा क्य, ज्ञ, क्ष, त्र्ल्य, इत्यादि) के पहले आनेवाले लघुवर्ण को गुरु माना जाता है। इसके कुछ अपवाद हैं जैसे प्र ह्र ब्र और क्र। प्राकृत में यह तभी होता है जब एक पहले क वर्ण और संयुक्ताक्षर एक ही शब्द में आएँ। यथा *मायामनुष्यं* में *नु* गुरु है (संस्कृत), परन्तु *जब ते राम ब्याहि घर आए* में *राम* का *म* लघु है (प्राकृत, भिन्न शब्द)।
- छन्द के एक चरण (चौथे या आधे भाग) के अन्त में लघु को गुरु गिना जा सकता हैं यदि चरण पूरा करने के लिए आवश्यकता हो (पादपूर्ति)।
- प्राकृत में एकार और ओकार एकमात्रिक भी होते हैं। यह सूक्ष्मज्ञान मानस के छन्द गाने के अभ्यास के बाद ही होता है, यहाँ कोई नियम नहीं है। यथा *सभय हृदय बिनवति जेहि तेहि* में *जेहि* का *जे* लघु है, परन्तु *तेहि* का *ते* गुरु है।

While reciting or singing Saṃskṛta and Prākṛta poetry, the caesura between two syllables where one is supposed to pause for a short time is called *Yati* in prosody.

काव्य गाते समय दो वर्णों के बीच आने वाले अल्पविराम या अवसान को छन्दःशास्त्र में "यति" की संज्ञा दी जाती है।

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

In Saṃskṛta and Praskrit prosody, the metres are described using eight single-consonant *codes* for three-syllable sequences. These codes are called Gaṇas, and are as below –

1. ***y*** (य्) Short-Long-Short
2. ***m*** (म्) Long-Long-Long
3. ***t*** (त्) Long-Long -Short
4. ***r*** (र्) Long-Short-Long
5. ***j*** (ज्) Short-Long-Short
6. ***bh*** (भ्) Long-Short-Short
7. ***n*** (न्) Short-Short-Short
8. ***s*** (स्) Short-Short-Long

The above sequence of the Gaṇas is a B(2,3) de Bruijn sequence with the alphabet set consisting of 'Short' and 'Long'. An oft-cited mnemonic to remember the sequence codes is *yamātārājabhānasalagā*. In this mnemonic, the lengths of the three syllables starting from the eight consonants are the lengths of the triplet represented by the consonant in the Gaṇa code.

छन्दःशास्त्र में आठ गणों द्वारा छन्दों का वर्णन किया जाता है। तीन वर्णों के समूह को संक्षेप में लिखने के लिए एक अक्षर का प्रयोग होता है। आठ गण इस प्रकार है –

१. य् लघु-गुरु-गुरु
२. म् गुरु-गुरु-गुरु
३. त् गुरु-गुरु-लघु
४. र् गुरु-लघु-गुरु
५. ज् लघु-गुरु-लघु
६. भ् गुरु-लघु-लघु
७. न् लघु-लघु-लघु
८. स् लघु-लघु-गुरु

उपर्युक्त गणों की श्रृंखला एक बी(२,३) डे-ब्रुइय्न श्रृंखला है जिसकी वर्णमाला में लघु और गुरु दो वर्ण हैं। के अक्षरों को सरलता से कण्ठस्थ करने के लिए एक सूत्र है – *यमाताराजभानसलगाः*। इस विलक्षण सूत्र के प्रत्येक व्यञ्जन से प्रारंभ हुए तीन वर्णों की मात्राएँ गणसूत्रों में उस व्यञ्जन से सम्बन्धित तीन मात्राएँ हैं।

There is also a Saṃskṛta verse describing the Gaṇas –

गणों का वर्णन करता एक श्लोक भी है –

आदिमध्यावसानेषु यरता यान्ति लाघवम् ।
भजसा गौरवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम् ॥

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

III. Metres of Saṁskṛta verses in the Rāmacaritamānasa
ग. श्रीरामचरितमानस में संस्कृत में प्रयुक्त छन्द

The Rāmacaritamānasa has 47 verses in Saṁskṛta and their metres are as follows –
मानस में कुल मिलाकर ४७ संस्कृत के श्लोक हैं जिनके छन्द इस प्रकार हैं –

1. Anuṣṭup
१. अनुष्टुप्
This is the metre of the first verse in the Mānasa. The Rāmāyaṇa of Valmīki is majorly composed in this metre. This is neither completely a metre determined by syllables, nor completely one determinied by instants. It has 4 feet in two lines, and every feet has 8 syllables - length of syllables is not same across feet. In every feet, the fifth syllable is long, and the sixth short. In the first and the third feet, the seventh syllable is long; while the seventh syllable in short in the second and fourth feet. There is a ceasura after every foot. The Mānasa has 7 verses in the Anuṣṭup metre - 5 at the beginning of Bālakāṇḍa (1.1.1 to 1.1.5), one at the beginning of Yuddhakāṇḍa (6.1.3) and one at the coda of Rudrāṣṭakam in the Uttarakāṇḍa (7.108.9). Example below is the first verse of the Mānasa -
यह मानस का पहला छन्द है। वाल्मीकि रामायण मुख्यतः इसी छन्द में लिखी हुई है। इसे श्लोक भी कहते हैं। यह छन्द न पूर्णतयः मात्रिक है, न ही पूर्णतयः वार्णिक। इसमें चार चरण होते हैं। हर चरण में आठ वर्ण होते हैं - पर मात्राएँ सबमें भिन्न भिन्न। प्रत्येक चरण में पाँचवा वर्ण लघु और छठा वर्ण गुरु होता है। पहले और तीसरे चरण में सातवाँ वर्ण गुरु होता है, और दूसरे और चौथे में सातवाँ वर्ण लघु होता है।प्रत्येक चरण के बाद यति होती है। मानस में ७ अनुष्टुप् छन्द हैं - पाँच बालकाण्ड के प्रारंभ में (१.१.१-१.१.५), एक युद्धकाण्ड के प्रारंभ में (६.१.३) और एक उत्तरकाण्ड में रुद्राष्टकम् के अन्त में (७.१०८.९)। उदाहरण - मानस का पहला छन्द (१.१.१) -

वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥

2. Śārdūlavikrīḍita
२. शार्दूलविक्रीडित
This beautiful metre has four feet of 19 syllables each. There is a ceasura after the 12th syllable and at the end of the feet. The sequence of short (S) and long (L) syllables is LLLSSLSLSSSL LLSLLSL. This metre occurs in all the seven Kāṇḍas of the Mānasa (other such metres are the Dohā, the Soraṭhā, the Caupāī and the Harigītikā). There are 10 verses in the Śārdūlavikrīḍita metre in the epic - one each at the beginning of Bālakāṇḍa (1.1.6), Ayodhyākāṇḍa (2.1.1), Sundarakāṇḍa (5.1.1), Yuddhakāṇḍa (6.1.2), two each at the eginning of Araṇyakāṇḍa (3.1.1,3.1.2) and Kiṣkinidhākāṇḍa (4.1.1, 4.1.2) and the two last verses (7.132.1, 7.132.2) of the Uttarakāṇḍa (and also the Mānasa.
इस मनोरम छन्द में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में १९ वर्ण होते हैं। १२ वर्णों के पश्चात् तथा चरण के अन्त में यति होती है। गणों का क्रम इस प्रकार है - म स ज स त त ग। मानस में यह छन्द सभी काण्डों में प्रयुक्त है (दोहा, सोरठा, चौपाई और हरिगीतिका भी सभी काण्डों में प्रयुक्त हैं)। मानस में १० शार्दूलविक्रीडित छन्द हैं - बालकाण्ड (१.१.६), अयोध्याकाण्ड (२.१.१), सुन्दरकाण्ड (५.१.१) और युद्धकाण्ड (६.१.२) के प्रारम्भ में एक-एक, अरण्यकाण्ड (३.१.१, ३.१.२) और किष्किन्धाकाण्ड

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

(४.१.१, ४.१.२) के प्रारम्भ में दो-दो, और उत्तरकाण्ड के (और मानस के) अन्तिम दो छन्द (७.१३१.१, ७.१३१.२)। उदाहरण - मानस का अन्तिम छन्द (७.१३१.२) -

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥

3. Vasantatilakā

३. वसन्ततिलका

This metre is also known as Uddharṣiṇī or Siṁhonnatā. This is a very mellifluous metre. Every foot has 14 syllables, and pause after the 8th and 14th syllables. The sequence of short (S) and long (L) syllables in every foot is LLSLSSSL SSLSLL. This metre is used at two places in the Mānasa -

इसे उद्धर्षिणी या सिंहोन्नता भी कहते हैं। यह बड़ा ही सुन्दर छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में १४ वर्ण होते हैं, ८ वर्णों के बाद यति होती है। गणों का क्रम इस प्रकार है - त-भ-ज-ज-ग-ग। "उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः"। मानस में दो स्थानों पर यह छन्द प्रयुक्त है -

1) At the beginning of the Bālakāṇḍa (1.1.7)

१) बालकाण्ड के प्रारम्भ में (१.१.७)

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥

2) At the beginning of Sundarakāṇḍa (5.1.2)

२) सुन्दरकाण्ड के प्रारम्भ में (५.१.२)

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥

4. Vaṁśastha

४. वंशस्थ

This metre is also called by the names Vaṁśasthavilia and Vaṁśastanita. It has 12 syllables in each foot, and the sequence of short (S) and long (L) syllables is SLSLLSSLSLSL. The Rāmacaritamānasa has only one verse composed in the Vaṁśastha metre at the beginning of the Ayodhyākāṇḍa (2.1.2) -

इसे वंशस्थविल अथवा वंशस्तनित भी कहते हैं। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में १२ वर्ण होते हैं और गणों का क्रम होता है - ज त ज र। प्रत्येक चरण में पाँचवे और बारहवे वर्ण के बाद यति होती है। मानस में केवल एक वंशस्थ छन्द का प्रयोग है अयोध्याकाण्ड के प्रारम्भ में (२.१.२) -

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदाऽस्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥

Some editions have the grammatically incorrect published form of मम्ले instead of मम्लौ.
स्मरण रहे कि कुछ प्रतियों में "मम्ले" पाठ छपा है जो अशुद्ध है। हमारे गुरुदेव के अनुसार - "ग्लैम्लै धातुक्षये" इस गणपाठ सूत्र से म्लै धातु परस्मैपदी होने के कारण लिट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में "मम्लौ" रूप ही बनता है।

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

5. Upajāti

५. उपजाति

When the Indravajrā (four feet of 11 syllables with the sequence LLSLLSSLSLL) and the Upendravajrā (four feet of 11 syllables with the sequence SLSLLSSLSLL) metres are mixed in the same verse, the resultant metre is called Upajāti. Ordinarily the Upajāti metre is the most frequently used metre in Saṃskṛta poetry, but it is used in only one verse in the Mānasa, at the beginning of Ayodhyākāṇḍa (2.1.3) -

इन्द्रवज्रा (चार चरण, ११ वर्ण - त त ज ग ग) और उपेन्द्रवज्रा (चार चरण, ११ वर्ण - ज त ज ग ग) के चरण जब एक ही छन्द में प्रयुक्त हों तो उस छन्द को उपजाति कहते हैं। साधारणतः उपजाति छन्द संस्कृत के काव्यों में सबसे अधिक प्रयुक्त होता है, परन्तु मानस में यह एक ही स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। अयोध्याकाण्ड के प्रारंभ में (२.१.३)

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

As per Gurudeva, only this śloka rightly deserves the distinction of being the single-verse Rāmāyaṇa, as its four feet respectively describe the four pastimes of the all-pervading Lord Rāma - childhood, marriage, war and rule in only one metre.

गुरुवर के अनुसार यहो श्लोक एकाक्षरी रामायण कहलाने योग्य हैं, क्योंकि इसके चार चरणों में प्रभु श्रीराम की चार लीलाओं - बाललीला, विवाहलीला, रणलीला और राज्यलीला का एक ही श्लोक में वर्णन है।

6. Pramāṇikā

६. प्रमाणिका

Every foot has 8 syllables, and the sequence of short (S) and long (L) syllables in a foot is SLSLSLSL. There are 13 verses composed in the Pramāṇikā metre in the Mānasa. In the eulogy by sage Atri in Araṇyakāṇḍa, there are 12 verses (3.4.1 to 3.4.12) in the Pramāṇikā metre, the first of which is as follows -

इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में ८-८ वर्ण होते हैं। चरण में वर्णों का क्रम लघु-गुरु-लघु-गुरु-लघु-गुरु-लघु-गुरु (।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ) होता है। गणों में लिखे तो ज-र-ल-ग। मानस में १३ प्रमाणिकाएँ हैं। अरण्यकाण्ड में अत्रि मुनि कृत स्तुति (३.४.१ से ३.४.१२) में १२ प्रमाणिकाएँ प्रयुक्त हैं जिनमें से प्रथम है -

नमामि भक्तवत्सलं कृपालुशीलकोमलम् ।
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदम् ॥

As per Gurudeva, the reason for 12 Pramāṇikā verses is that the Lord lived for 12 years in Citrakūṭa. There is one verse composed in the Pramāṇikā metre in the conversation between Kākabhuṣuṇḍi and Garuḍa in the Uttarakāṇḍa - 7.122(3)

गुरुदेव के अनुसार १२ प्रमाणिकाएँ प्रयुक्त होने का कारण है कि प्रभु राम ने १२ वर्षों तक चित्रकूट में निवास किया था। उत्तरकाण्ड में काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद में एक प्रमाणिका है - ७.१२२(ग)

विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

7. Mālinī

७. मालिनी

This metre has four feet of 15 syllables each, and the sequence of short (S) and long (L) syllables in each foot is SSSSSSLL LSLLSLL. The pause occurs after the 8th syllable and at the end of the foot. There is only one verse in the Mālinī metre in the Mānasa which occurs in the praise of Hanumān Ji at the beginning of Sundarakāṇḍa (5.1.3) -

इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में पन्द्रह (१५) वर्ण होते हैं - दो नगण, एक मगण और दो यगण (न-न-म-य-य) होते हैं। आठवे वर्ण पर और चरण के अंत में यति होती है। मानस में केवल एक मालिनी छन्द है जो सुन्दरकाण्ड के प्रारम्भ में हनुमान जी की स्तुति में आता है (५.१.३) -

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

8. Sragdharā

८. स्रग्धरा

Among metres used for Saṁskṛta verses in the Mānasa, the Sragdharā is the longest. There are 21 syllables in every foot, and there are ceasuras at 7th, 14th and 21st syllables. The sequence of short (S) and long (L) syllables is LLLLSLL SSSSSSL LSLLSLL. This metre is used in two verses in the Mānasa

स्रग्धरा मानस में प्रयुक्त संस्कृत छन्दों में सबसे लम्बा है। इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में वर्ण २१ होते हैं, और ७-७-७ के क्रम से यति। गणों का क्रम इस प्रकार है - म-र-भ-न-य-य-य। तदनुसार लघु(।)-गुरु(ऽ) का क्रम इस प्रकार है - ऽऽऽऽ।ऽऽ (यति) ।।।।।।ऽ (यति) ऽ।ऽऽ।ऽऽ (यति)। मानस में दो स्थानों पर यह छंद प्रयुक्त है –

1) The first verse of the Yuddhakāṇḍa (6.1.1)

१) युद्धकाण्ड का पहला छन्द (६.१.१)

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वन्दे कन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥

2) The first verse of the Uttarakāṇḍa (7.1.1)

२) उत्तरकाण्ड का पहला छन्द (७.१.१)

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥

9. Rathoddhatā

९. रथोद्धता

This metre has 11 syllables in each foot, and the sequence of short (S) and long (L) syllables is LSLSSSLSLSL. The pause occurs after the third or fourth syllable of the foot and also at the end of the foot. There are two verses composed in the Rathoddhatā metre at the beginning of the Uttarakāṇḍa (7.1.2 and 7.1.3) of the Mānasa -

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

इसके चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में ११-११ वर्ण होते हैं। गणों का क्रम है र-न-र-ल-ग। हर चरण में तीसरे/चौथे वर्ण के बाद यति होती है। मानस में उत्तरकाण्ड के प्रारंभ में दो रथोद्धता छन्द हैं (७.१.२ और ७.१.३) -

कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥
कुन्द इन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥

As per Gurudeva's words, the word Kundaḥ at the beginning of 7.1.3 is in the nominative case and stands for dumwitted, the Visarga is elided due to Sandhi.
गुरुवचन के अनुसार ७.१.३ के प्रारंभ में "कुन्दः मन्दबुद्धिः इन्दुदरगौरसुन्दरम्" विग्रह समझना चाहिए। कुन्दः अहम् तुलासीदासः शंकरं नौमि इति। सन्धि के कारण कुन्दः के विसर्ग का लोप हो गया है।

10. Bhujaṅgaprayāta
१०. भुजङ्गप्रयात

This metre has four feet of 12 syllables, and the sequence of short (S) and long (L) syllables is SLLSLLSLLSLL. In the Rudrāṣṭakam (7.108.1 to 7.108.8), the eulogy of Lord Śiva sung by the Brahmin n the Uttarakāṇḍa, there occur 8 verses in the Bhujaṅgaprayāta metre, the first one of which is
इसके चार चरण होते हैं। हर चरण मे चार यगण होते हैं (य-य-य-य)। उत्तरकाण्ड में रुद्राष्टक (७.१०८.१-७.१०८.८) में ब्राह्मण द्वारा की गयी शिवजी की स्तुति में आठ भुजङ्गप्रयात छन्दों का प्रयोग है, जिनमें से प्रथम है -

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥

IV. Metres of Prākṛta (Avadhī) verses in the Rāmacaritamānasa
घ. श्रीरामचरितमानस में प्राकृत (अवधी) में प्रयुक्त छन्द

11. Soraṭhā (Saurāṣṭra)
११. सोरठा (सौराष्ट्र)

This is the first metre in Prākṛta (Avadhī) in the Mānasa. This metre is determined by instants, and not syllables. The four feet have 11, 13, 11 and 13 instants respectively. The pause occurs at the end of every foot. There is rhyme at the end of first and third feet, and the sequence of rhyming pattern is short and long (SL). The 11 instants are parsed in the 6-4-1 sequence, and the 13 ihnstants are parsed in the 6-4-3 sequence, but there is no rule for ceasura in this division. There is a word boundary at the end of every foot. Example is (1.1.8) -
यह मानस में प्राकृत में पहला छन्द है। यह मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरणों में ११-१३ ११-१३ मात्राएँ होती हैं। हर चरण के अन्त में यति होती है। पहले और तीसरे चरण के अन्त में तुक होता है, और तुक में गुरु-लघु का क्रम रहता है। ११ मात्राएँ ६-४-१ और १३ मात्राएँ को ६-४-३ में विभाजित होती हैं, परन्तु इस विभाजन में यति या शब्द सीमा का कोई नियम नहीं है। हर चरण के अन्त पर शब्द सीमा होती है। उदाहरण (१.१.८) -

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

जेहि सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

The Dohā is the mirror image of the Soraṭhā - the feet have 13, 11, 13 and 11 instants and the rhyme occurs at the end of second and fourth feet. Although both odd and even feet have rhyme in this Soraṭhā, yet it cannot be termed as a Dohā because the rhyme sequence at the end of even feet does not have the short-long sequence. Moreover, the word बुद्धि cannot be split across two feet, and including it with करउ अनुग्रह सोइ will lead to a 14-10 instant sequence, instead of 13-11. The Mānasa as 87 verses composed in the Soraṭhā metre - 36 in Bālakāṇḍa, 13 in Ayodhyākāṇḍa (after every 25th group of Caupāīs - 2.25, 2.50, 2.75, 2.100, 2.126, 2.151 et cetera), 8 in Araṇyakāṇḍa, 3 in Kiṣkinidhākāṇḍa, 1 in Sundarakāṇḍa, 9 in Yuddhakāṇḍa, and 17 in Uttarakāṇḍa.
दोहा में १३-११ १३-११ का क्रम रहता है और तुक दूसरे और चौथे चरण में बनता है - बाकी सब सोरठे जैसा ही है। वैसे यहाँ भी दूसरे और चौथे चरण में तुक है लेकिन यह दोहा नहीं है क्योंकि बदन और सदन में तुक में गुरु-लघु का क्रम नहीं है, और दूसरे पंक्ति में १३ मात्राओं के बाद यति (शब्द का अंत) नहीं है, "करउ अनुग्रह सोइ" में "बुद्धि" जोड़ने से ११ से सीधे १४ मात्राएँ हो जायेंगी और क्रम १४-१० हो जायेगा। मानस में ८७ सोरठे हैं - बालकाण्ड में ३६, अयोध्याकाण्ड में १३ (हर पच्चीसवे चौपाई समूह के बाद - २.२५, २.५०, २.७५, २.१००, २.१२६, २.१५१,इत्यादि), अरण्यकाण्ड में ८, किष्किन्धाकाण्ड में ३, सुन्दरकाण्ड में १, युद्धकाण्ड में ९ और उत्तरकाण्ड में १७।

12. Caupāī
१२. चौपाई
This metre, determined by instants, has two feet of 16 instants each. Within every foot, there is a pause after the eighth instant. This is the main metre of the Mānasa. One foot of this metre is called Ardhālī. The rhyme occurs at the end of the first and second feet. Example (5.40.6) is -
इस मात्रिक छन्द के दो चरण होते हैं, प्रत्येक में १६-१६ मात्राएँ होती हैं। हर चरण में ८ मात्राओं के बाद यति होती है। केवल एक चरण हों तो उसे अर्धाली कहते हैं। यह मानस का प्रमुख छन्द है। प्रथम और द्वितीय चरण के अन्त में तुक होता है। उदाहरण (५.४०.६) -

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना॥

The metre in Hanumān Cālīsā is the same, which has 40 verses in this metre. Mānasa contains 9388 verses in the Caupāī metre, and they are compared to the the dense leaves of lotuses in the Mānasa lake in the following Ardhālī (1.37.4) by Gosvāmī Tulasīdāsa -
हनुमान चालीसा में भी यही छंद है, और वहाँ ४० चौपाइयाँ हैं। मानस में कुल ९३८८ चौपाइयाँ हैं, जिनकी उपमा इस अर्धाली (१.३७.४) में गोस्वामी जी ने मानससरोवर के घने कमल के पत्तों से दी है -

पुरइनि सघन चारु चौपाई।

13. Dohā (Dvipāda)
१३. दोहा (द्विपाद)
This is also a metre determined by instants. There are 13, 11, 13 and 11 instants respectively in the four feet. There is a ceasura at the end of every foot, and rhyme occurs at the end of even feet. The rhyme has the syllable sequence of short-long. The 13

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

instants are parsed as 6-4-3 and the 11 instants as 6-4-1, but there is no rule of pause or word boundary within this parsing. There is a word boundary at the end of every foot. Example (1.1) -

यह भी एक मात्रिक छंद है। इसमें चार चरणों में १३-११ १३-११ मात्राएं होती हैं। हर चरण के अन्त में यति होती है। दूसरे और चौथे चरण के अन्त में तुक होता है, और तुक में गुरु-लघु का क्रम रहता है। १३ मात्राएँ ६-४-३ और ११ मात्राएँ को ६-४-१ में विभाजित होती हैं, परन्तु इस विभाजन में यति या शब्द सीमा का कोई नियम नहीं है। हर चरण के अन्त पर शब्द सीमा होती है। उदाहरण (१.१) -

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥

The Rāmacaritamānasa contains 1172 verses in the Dohā metre - among which there are 359 in the Bālakāṇḍa, 314 in the Ayodhyākāṇḍa, 51 in the Araṇyakāṇḍa, 31 in the Kiṣkinidhākāṇḍa, 62 in the Sundarakāṇḍa, 148 in the Yuddhakāṇḍa, and 207 in the Uttarakāṇḍa.

श्रीरामचरितमानस में ११७२ दोहे हैं - जिनमें बालकाण्ड में ३५९, अयोध्याकाण्ड में ३१४, अरण्यकाण्ड में ५१, किष्किन्धाकाण्ड में ३१, सुन्दरकाण्ड में ६२, युद्धकाण्ड में १४८ और उत्तरकाण्ड में २०७ दोहे सम्मिलित हैं।

14. Harigītikā

१४. हरिगीतिका

If the Caupāīs were the lotuses, the Dohā-Soraṭhā are the water-lilies, then the Harigītikās are verily the Brahma Kamala (*Saussurea obvallata)* visible at the high peaks. This metre is so incomparably melodious to sing, and the poetic excellence of Gosvāmī Tulasīdāsa is so refined in this metre that the beauty can be experienced only by listening. Each of its four feet contains 28 instants, in the sequence of 7-7-7-7 (further parsed as 2-2-1-2, 2-2-1-2, 2-2-1-2, 2-2-1-2). The rhyme occurs at the end of first and second feet and also at the end of third and fourth feet. The pattern of the rhyme is short-long. In the Mānasa, Harigītikās invariably occur after the Caupāīs and before the Dohā or the Soraṭhā. Often the first 2-3 words of the Harigītikā are same as or synonyms of the last 2-3 words of the immediately preceding Caupāī. It is noticeable that in the context of Lord Śiva's marriage, Harigītikās occur at 11 places and in the context marriage of Lord Rāma, Harigītikās occur at 12 places. As per Svami Akhaṇḍānanda Sarasvatī, the reason is that Lord Śiva is one of the Rudras who are 11 in number, while Lord Rāma one of the Ādityas (Viṣṇu) who are 12 in number. An example is (5.35.11) -

यदि मानस कि चौपाइयाँ कमल हैं और दोहे-सोरठे कुमुद हैं, तो निश्चित रूप से हरिगीतिका उत्तुङ्ग शिखरों पे दीखने वाला "ब्रह्मकमल" है। यह छन्द गाने में अत्यन्त मनोहर है, और इसमें गोस्वामीजी के भाव ऐसे निखर के सामने आते हैं कि इस छन्द की शोभा सुनते ही बनती है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं, जोकि ७-७-७-७ (२-२-१-२, २-२-१-२, २-२-१-२, २-२-१-२) के क्रम से होती हैं। प्रत्येक सातवीं मात्रा के बाद यति होती है। पहले और दूसरे चरण के अन्त में तुक होता है, और तीसरे और चौथे चरण के अन्त में भी तुक होता है। तुक में क्रम लघु-गुरु होता है। मानस में हरिगीतिका चौपाइयों और दोहा/सोरठा के बीच आता है। और इसके प्रारम्भ के २-३ शब्द प्रायः इसके पहले की चौपाई के अंत के २-३ शब्द अथवा उन शब्दों के पर्याय होते है। ध्यान देने योग्य है कि शिव विवाह में ११ स्थानों पर (१ सोरठा और १० दोहों के पहले) और राम विवाह में १२ स्थानों पर (१२

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

दोहों के पहले) हरिगीतिका छन्द है - स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती के अनुसार इसका कारण है कि रुद्र (शिव) ११ हैं और आदित्य (विष्णु) १२ हैं। उदाहरण (५.३५.११) -

चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल पावक खरभरे।
मन हरष सभ गंधर्ब सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं॥

There are only five metres which are present in all the seven Kāṇḍas in the Mānasa - the Śārdūlavikrīḍita, the Soraṭhā, the Caupāī, the Dohā and the Harigītikā. There are 139 verses in the Rāmacaritamānasa composed in the Harigītikā metre - 47 in the Bālakāṇḍa, 13 in the Ayodhyākāṇḍa, 14 in the Araṇyakāṇḍa, 3 in the Kiṣkinidhākāṇḍa, 6 in the Sundarakāṇḍa, 38 in the Yuddhakāṇḍa and 18 in the Uttarakāṇḍa.

मानस में केवल पाँच छन्द हैं जो प्रत्येक काण्ड में हैं - चौपाई, दोहा, हरिगीतिका, सोरठा और शार्दूलविक्रीडित। हरिगीतिकाओं की सङ्ख्या १३९ है - बालकाण्ड में ४७, अयोध्याकाण्ड में १३, अरण्यकाण्ड में १४, किष्किन्धाकाण्ड में ३, सुन्दरकाण्ड में ६, युद्धकाण्ड में ३८ और उत्तरकाण्ड में १८।

15. Caupaiyā

१५. चौपैया

This metre has four feet, and every feet consists of 30 instants. There is ceasura after the 10t, 18th and 30th instant and the last syllable of every foot is long. Rhyme occurs at the end of the first and second feet, and at the end of third and fourth feet. In addition, within the foot, rhyme occurs at the end of 10th and 18th instants. In this metre, the sequence is 10-8-12, while it is 10-8-14 in the Tribhaṅgī metre. In the Mānasa, there are 10 verses composed in the Caupaiyā metre - 1.183.9, 1.184.9, 1.1861.1 to 1.186.4 and 1.192.1 to 1.192.4. Among these verses, those forming the eulogy of Śrīrāmacandra by the deities (1.186.1 to 1.186.4) and the manifestation of Śrīrāma (1.192.1 to 1.192.4) are very dear to the passionate Mānasa lovers. Examples -

चार चरण, हर चरण में ३० मात्राएँ (१०-८-१२) , १० और १८ मात्राओं के बाद यति, हर चरण के अंत में गुरु। पहले और दूसरे चरणों के अन्त में तुक, तीसरे और चौथे चरणों के अंत में तुक। और साथ ही हर चरण के अन्दर १० और १८ मात्राओं के अन्त पे भी तुक। ध्यान रहे - त्रिभङ्गी में १०-८-१४ मात्राओं का क्रम है, और यहाँ १०-८-१२। मानसजी में बालकाण्ड में १० चौपैया छन्दों का प्रयोग है - १.१८३.९, १.१८४.९, १.१८६.१ से १.१८६.४, १.१९२.१ से १.१९२.४। इनमें देवताओं द्वारा श्रीरामचन्द्र की स्तुति (१.१८६.१ से १.१८६.४,) और श्रीराम का आविर्भाव (१.१९२.१ से १.१९२.४) तो मानस प्रेमियों को अत्यन्त प्रिय हैं। उदाहरण -

1) Eulogy by the deities (1.186.1)

१) देवताओं की स्तुति (१.१८६.१)

जय जय सुरनायक (१०) + जन सुखदायक (८) + प्रनतपाल भगवंता (१२) = ३०।
गो द्विज हितकारी (१०) + जय असुरारी (८) + सिंधुसुता प्रिय कंता (१२) = ३०॥
पालन सुर धरनी (१०) अद्भुत करनी (८) मरम न जानई कोई (१२) = ३०।
जो सहज कृपाला (१०) + दीनदयाला (८) करउ + अनुग्रह सोई (१२) = ३०॥

2) The manifestation of Śrīrāma (1.192.1)

२) श्रीराम जी का आविर्भाव (१.१९२.१)

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

भए प्रगट कृपाला (१०) + दीनदयाला (८) + कौसल्या हितकारी (१२) = ३० ।
हरषित महतारी (१०) + मुनि मन हारी (८) + अद्भुत रूप बिचारी (१२) = ३० ॥
लोचन अभिरामा (१०) + तनु घनश्यामा (8) + निज आयुध भुज चारी (१२) = ३० ।
भूषन बनमाला (१०) + नयन बिशाला (८) शोभासिन्धु खरारी (१२) = ३० ॥

16. Tribhaṅgī
१६. त्रिभङ्गी

Each feet of the Tribhaṅgī has 32 instants. There is rhyme within every foot and also between feet. Rhyme occurs at the end of first and second feet and also at the end of third and fourth feet, and the last syllable of every foot is long. The 32 instants are divided as 10-8-14 and there are pauses at the 10th, 18th and 32nd instant. In addition, there is rhyme at 10th and 18th instant of every foot. Sometimes a Tribhaṅgī is also defined as 10-8-8-6, but all the Tribhaṅgīs in Mānasa do not have a pause after the 26th instant, and hence the sequence 10-8-14 is given here. In the context of the redemption of Ahalyā. there are 4 verses in the Tribhaṅgī metre - 1.211.1 to 1.211.4. As per Gurudeva, the reason is that the sin, sufferinig anf curse of mother Ahalyā were destroyed by the touch of the feet of Lord Rāma, and hence Sarasvatī made the Tribhaṅgī metre come forth in the words of Gosvamījī. Example (1.211.1) -

त्रिभङ्गी के एक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं। इसमें एक चरण के अन्दर भी तुक होता है और चरणों के बीच मैं भी। प्रथम और द्वितीय चरणों में, और तृतीय और चतुर्थ चरणों में तुक होता है - और हर चरण का अन्तिम वर्ण गुरु होता है। ३२ मात्राएँ १०-८-१४ में विभाजित हैं, १० और ८ के बीच यति है, और ८ और १४ के बीच यति है। साथ में १० मात्राओं के अन्तिम वर्ण और ८ मात्राओं के अन्तिम वर्ण में भी तुक बनता है। ऐसे त्रिभंगी को १०-८-८-६ में भी बाँटते हैं, पर मानस में सर्वत्र अन्तिम ८ और ६ के बीच यति न होने के कारण १०-८-१४ का क्रम दिया गया है। मानस में बालकाण्ड में अहल्योद्धार के प्रकरण में चार (४) त्रिभङ्गी छन्द प्रयुक्त हुए हैं - १.२११.१ से १.२११.४। गुरुवचन के अनुसार इसका कारण है कि अपने चरण से अहल्या माता को छूकर प्रभु श्रीराम ने अहल्या के पाप, ताप और शाप को भङ्ग (समाप्त) किया, अतः गोस्वामी जी की वाणी में सरस्वतीजी ने त्रिभङ्गी छन्द को प्रकट किया। उदाहरण (१.२११.१) -

परसत पद पावन (१०) + शोक नसावन (८) + प्रगट भई तपपुंज सही (१४) = ३२ ।
देखत रघुनायक (१०) + जन सुखदायक (८) + सनमुख होइ कर जोरि रही (१४) = ३२ ॥
अति प्रेम अधीरा (१०) + पुलक शरीरा (८) + मुख नहिं आवइ बचन कही (१४) = ३२ ।
अतिशय बड़भागी (१०) + चरनन लागी (८) + जुगल नयन जलधार बही (१४) = ३२ ॥

17. Tomara
१७. तोमर

Tomara is a metre determined by instants, and each foot of this metre contains 12 instants. There is ryme at the end of the first and second feet, and also at the end of third and fourth feet. There are 24 verses in this metre in the Mānasa - 8 verses each at three places. These three places are -

तोमर एक मात्रिक छन्द है जिसके प्रत्येक चरण में १२ मात्राएँ होती हैं। पहले और दुसरे चरण के अन्त में तुक होता है, और तीसरे और चौथे चरण के अन्त में भी तुक होता है। मानस में तीन स्थानों पर आठ-आठ (कुल २४) तोमर छन्दों का प्रयोग है। ये तीन स्थान हैं

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

1) Lord Rāma's battle against Khara, Dūṣaṇa, Triśirā and army of 14000 demons in the Araṇyakāṇḍa (3.20.1 to 3.20.8)

१) अरण्यकाण्ड में खर, दूषण, त्रिशिरा और १४००० राक्षसों की सेना के साथ प्रभु श्रीराम का युद्ध (३.२०.१ से ३.२०.८) -

तब चले बान कराल । फुंकरत जनु बहु ब्याल ।
कोपेउ समर श्रीराम । चले बिशिख निशित निकाम ॥

2) The deceptive war-play by Rāvaṇa in the Yuddhakāṇḍa (6.101.1 to 6.101.8)

२) युद्धकाण्ड में रावण का मायायुद्ध (६.१०१.१ से ६.१०१.८)

जब कीन्ह तेहिं पाषंड । भए प्रगट जंतु प्रचंड ॥
बेताल भूत पिशाच । कर धरें धनु नाराच ॥

3) The eulogy of Śrīrāghava by Indra after the entry of Vedavatī into the fire and return of mother Sītā from the fire in the Yuddhakāṇḍa (6.113.1 to 6.113.8)

३) युद्धकाण्ड में वेदवतीजी के अग्निप्रवेश और सीताजी के अग्नि से पुनरागमन के पश्चात् इन्द्रदेव द्वारा राघवजी की स्तुति (६.११३.१ से ६.११३.८)

जय राम शोभा धाम । दायक प्रनत बिश्राम ॥
धृत तूण बर शर चाप । भुजदंड प्रबल प्रताप ॥

18. Toṭaka

१८. तोटक

The Toṭaka metre has four feet, every foot has 12 syllables and the sequence of short (S) and long (L) syllables in a foot is SSLSSLSSLSSL. There are 31 verses composed in the Toṭaka metre at the following places -

तोटक में चार चरण होते हैं। हर चरण में १२-१२ वर्ण होते हैं और सारे छंद में केवल "सगण" (लघु-लघु-गुरु अथवा ॥ऽ) का क्रम रहता है ("वद तोटकमब्धिसकारयुतम्")। प्रत्येक चरण में ४ सगण होते हैं। मानस जी में ३१ तोटक छन्द हैं जो कि इन स्थानों पर हैं –

1. Eleven verses (6.111.1 to 6.111.11) in the Yuddhakāṇḍa, in the eulogy of Śrīrāghava by Brahmā after the slaying of Rāvaṇa

१. युद्धकाण्ड में रावण बध के बाद ब्रह्माजी कृत राघवस्तुति में ग्यारह छन्द (६.१११.१ से ६.१११.११) -

जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ॥
भव बारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ बिभो ॥

2. Ten verses (7.14.1 to 7.14.10) in the eulogy by Vedas in the Uttarakāṇḍa

२. उत्तरकाण्ड में वेदों द्वारा की गयी स्तुति में दस छन्द (७.१४.१ से ७.१४.१०) -

जय राम रमा रमणं शमनम् । भवताप भयाकुल पाहि जनम् ॥
अवधेश सुरेश रमेश बिभो । शरणागत माँगत पाहि प्रभो ॥

3. Ten verses (7.101.1 to 7.101.5 and 7.102.1 to 7.102.5) in the description of the terrible Kali age during the previous birth of Kākabhuṣuṇḍi in the Uttarakāṇḍa

३. उत्तरकाण्ड में काकभुशुण्डि जी के पूर्वजन्म की कथा में विकराल कलियुग वर्णन के प्रकरण में दस छन्द (७.१०१.१ से ७.१०१.५, और ७.१०२.१ से ७.१०२.५) -

बहु दाम सँवारहिं धाम जती । विषया हरी लीन्ह गई बिरती ॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलि कौतुक तात न जात कही ॥

© Copyright 2011 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.